Impact Factor – 6.625 ▪ Special Issue - 000 ▪ June 2023 ▪ ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED AND INDEXED JOURNAL

Two Day Interdisciplinary National Conference On

INDIA @75

... Guest Editor ...

Dr. O. J. Rasal

Mr. S. S. Patel

... Chief Editor ...

Dr. Dhanraj T. Dhangar

... Executive Editors ...

Mr. H. S. Shaikh

Mr. C. M. Gangawane

... Jointly Organized by ...

Pravara Medical Trust's,

Arts, Commerce & Science College, Shevgaon

Dist. Ahmednagar – 414502

Printed by : Academic Book Publications, Jalgaon

Impact Factor – 6.625 ▪ Special Issue - 000 ▪ March 2023 ▪ ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal
Multidisciplinary International E-Research Journal

Printed by

Academic Book Publications

Dyandeep Apartment, Plot No. 2, Chaitanya Nagar,
Opp. Progressive English Medium School, Jalgaon - 425 001.
E-mail : academicbooksjalgaon@gmail.com
Ph.: (0257) 2235520, 2232800. Mob.: 91752 85943, 88308 24241.

EDITORIAL POLICIES - Views expressed in the papers / articles and other matter published in this issue are those of the respective authors. The editor and associate editors does not accept any responsibility and do not necessarily agree with the views expressed in the articles. All copyrights are respected. Every effort is made to acknowledge source material relied upon or referred to, but the Editorial Board and Publishers does not accept any responsibility for any inadvertent omissions.

:CONTENTS:

1. **MSME (Micro, Small, and Medium Enterprises) Business in India** 1
Dr. Mangesh Shirsath

2. **MSME (Micro, Small, and Medium Enterprises) Business in India** 4
Dr. Renuka M. Suryawanshi, Dr. Santosh D. Pawale

3. **Allelopathic effect of Cassia tora on Economic Legumes (Cicer arietinum, Vigna radiata And Glycine max)** 9
Samidha S. Halnar, Harshali R. Dighe

4. **Impact of Covid – 19 on Agriculture** 11
G. M. Bodakhe, R. D. Shelke, R. A. Thombare

5. **Growth Factors and Challenges before Gold Industry in India** 20
Prof. Dr. Sanjay Laxman Argade, Sapna Balkrushna Shahane

6. **Water Pollution and Treatment Method** 22
Jyoti Kadubal Khandagale

7. **Role of Social Media in India** 26
Meherarti Bade

8. **Role of Social Media in India** 29
Varsha D. Dhamale

9. **Artificial Intelligence : The Future** 32
Ashwini Shivajirao Doifode

10. **Effect on Mycorrhizal Fertilizer on Tomato with Respect to**
11. **Some Morphological and Biochemical Aspect** 37
Sunita Bhagavan Gadekar

12. **Cultural Diversification in Post - Interdependence Period** 40
Hemalata Prakash Joshi

13. **Digital Marketing Trends in India** 44
Komal Ramkrushna Kale

14. **The comparatively study of Nano nanocrystalline Tin Oxide SnO2 & Fluorine doped tin oxide SnO2: F thin films for Solar cell Applications.** 49
B. L. Khatik, G. A. Agale, Dr. R. N. Arle

15. **Management and Utilization of Wells and Borewells in Agriculture Sectoar** 53
Dr. D. B. Kharat, Mr. K. V. Kokare

16. **Role of Microfinance Using Regression Analysis for Women's Economic Empowerment** 55
Mrs. Vanita Suresh Lingayat, Dr. H. S. Lunge

17. **Extraction & Estimation of Chlorophyll from Medicinal Plant** 59
Prof. Yashoda Ramesh Neel

18. **Cloud Computing** 61
Sarita Somnath Raut

19. **A seasonal hematology study in major carps cultured in Ahmednagar district, and effects of probiotic feed on fingerlings growth** 66
Mr. Govind Chandrakant Nikam

38. **मानव विकास निर्देशांक आणि भारत** 152
अर्चना रामनाथ कानवडे, प्रा.डॉ. कैलास अर्जुनराव ठोंबरे

39. **स्थानीय सरकार के गठन और तांतमुक्ति ग्राम अभियान का संबंध** 155
बाळासाहेब भानुदास खरात, डॉ. पापली राम

40. **मार्क्सचे धर्मविषयक विचार** 159
सोपान बाळासाहेब नवथर

41. **हिंदी सिनेमा और पटकथा लेखन** 161
श्रीकांत भाऊसाहेब शिंदे

42. **मराठी साहित्यातील वास्तववादी साहित्यप्रवाह: दलित साहित्य** 163
सुधीर किसनराव त्रिभुवन

43. **खेडे 75** 166
प्राचार्य हितेंद्र रामरावजी आहेर आणि सहा. प्रा.जयवंत रामदास भदाणे

44. **वारकरी कीर्तन संकल्पना स्वरूप** 168
प्रा राहुल अशोक भाकरे

45. **स्वातंत्र्योत्तर काळातील स्त्रीयांची परिवर्तनशील कविता** 170
प्रा. ज्योती आनंदराव दिघे

46. **हिंदी साहित्य और सिनेमा** 172
प्रा. गोरख भोरू इदे

47. **महात्मा गांधी यांच्या आर्थिक विचाराची सद्यस्थितीतील उपयुक्तता** 174
प्रा. महेश शिवाजीराव जाधव

48. **आधुनिक मराठी साहित्यातील कादंबरीचे बदलते प्रवाह** 176
रामदास पंढरीनाथ कातकडे

49. **भारतातील टपाल खात्यातील स्थित्यंतरे : काल आणि आज** 179
माधवी अशोक मोरे-पिसाळ

50. **धूळपावलं कादंबरीतील समाजजीवन** 181
प्रा. सुरेश लक्ष्मण नजन

51. **शांता शेळके यांचे मराठी माणसाच्या हृदयातील मराठी गीते** 183
प्रा. स्मिता मुरलीधर पालेकर (शहाणे)

52. **भारताचे परराष्ट्र धोरण आणि संबंध** 189
प्रा. मोहन भानुदास परतवाघ

53. **गांधी युगातील स्वातंत्र्य चळवळीत स्त्रियांचे योगदान** 193
प्रा. शाहुराव पवार

54. **स्वातंत्र्याची पंच्याहत्तरवी : जात वास्तव आणि 'फँड्री'** 198
प्रा. स्वप्निल भारत रणखांबे

55. **आर्थिक विकासात परकीय गुंतवणूकीचे महत्त्व** 202
डॉ. एस. बी. पाते, मनिषा किसन सानप

56. **सिनेमा और फिल्मांतरण** 205
केशव काकासाहेब ससे

57. **भारतीय स्वातंत्र्याची 75 वर्ष: एक अवलोकन** 207
रवी सुभाषराव सातभाई

58. **मराठवाडा मुक्ती संग्रामाचा लढा एक अभ्यास** 210
प्रा. गहिनीनाथ लिंबराज शेळके

59. **भारताचे परराष्ट्र धोरणाचे तत्त्वे आणि उद्दिष्टे** 212
गणेश शेषराव शेळके

RESEARCH JOURNEY Internationl Multidisciplinary E-Research Journal ISSN : 2348-7143
Impact Factor (SJIF) - 6.625 | *Special Issue 000 : India@75* June 2023

सिनेमा और फिल्मांतरण

केशव काकासाहेब ससे
प्रवरा मेडिकल ट्रस्टचे आर्ट्स कॉमर्स, अँण्ड सायन्स कॉलेज, शेवगांव.

प्रस्तावना :

मनुष्य ने अपने मस्तिष्क की भूख मिटाने के लिए विभिन्न कलाओं का निर्माण किया। मनुष्य अपनी भूख प्यास कि समस्या मिटने के बाद कलाओं के निर्माण और आस्वादन में खोने लगा। मनुष्य जाति के विकास में साहित्य, शिल्प, चित्र, संगीत, नाट्य आदि कलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपुर्ण रही है। इन सभी कलाओं का मिश्रित रूप सिनेमा कहा जा सकता है। सिनेमा का रूप पुर्णत: कलात्मक होने के बावजूद भी सिनेमा का निर्माण वैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर और वैज्ञानिक यंत्रों पर आधारित है।

सिनेमा ने नाटक एवं रंगमंच की सीमाओं को तोडकर प्रभावशाली कला के रूप में सामने आया है। ''सिनेमा मासमीडिया है। मास मनोरंजन है। वह सबके लिए कम किमत पर उपलब्ध है। सिनेमा सहज, सरल, ग्रहणीय, स्मरणीय, आशावादी, यथार्थवादी, काल्पनिक, रोमांटिक है। सिनेमा, बच्चे, बूढे, गरीब स्त्री, पुरूष, हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, बौद्ध सबके लिए उपलब्ध है''। संदर्भ सिनेमा को अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम माना जाता है।

सिनेमा का अर्थ :

सिनेमा मनोरंजन का एक ऐसा साधन है जिसमें कोई कहानी घटित होती है और चलती फिरती छबियों के कारण जिसमें निरंतरता का आभास होता है। सिनेमा के लिए आज के जमाने में विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है। सिनेमा को आरंभिक काल में चलचित्र अथवा मोशन पिक्चर नाम से जाना जाता था। जैसे-जैसे सिनेमा का विकास होता गया वैसे -वैसे सिनेमा को विभिन्न विद्वानों अपनी-अपनी दृष्टि के अनुसार सिनेमा के अर्थ प्रतिपादित किये है।

नालन्दा शब्दसागर में सिनेमा को ''चलचित्र'' का पर्यायवाची शब्द मानकर सिनेमा का अर्थ बताया है, वे चित्र जो परदे पर जीवित प्राणियों के समान काम करते दिखाये जाते हैं। अर्थात हिलते या चलायमान चित्रों को पर्दे पर दिखाकर वास्तविक जीवन का आभास पैदा करना सिनेमा है। आज के युग में सिनेमा को चलचित्र, मोशन पिक्चर, मूवी, फिल्म, आदि कई प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इसमें से चलचित्र के व्यापक अर्थ को स्पष्ट करने में सिनेमा यह शब्द सक्षम है।

सिनेमा बिसवीं शताब्दी की लोकप्रिय कला है। यह एक ऐसी कला है जिसमें बाकी सभी कलाओं को समेटा जा सकता है। सिनेमा में परंपरागत सभी कलाओं को अपनाया है। विश्व की सभी परंपरागत कलाओंने जैसा की वैसा स्थान सिनेमा में पाया है। सिनेमा सिर्फ कला न होकर वह विज्ञान भी है, क्योंकी सिनेमा निर्माण के लिए वैज्ञानिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। जैसे, ध्वनि एवं प्रकाश, कैमरा, स्क्रिन, आदि संसाधनों की आवश्यकता होती है।

आज सिनेमा के कारण रोजगार की विभिन्न संधियाँ उपलब्ध हो चूकि है। आज व्यावसायिकता के कारण सिनेमा काफी प्रभावित हुआ है। ''सिनेमा छायांकन, संपादन, आदि तकनीकी उपादानों के कलात्मक प्रयोगद्वारा स्थिर चित्रों में वास्तविक जीवन का आभास उत्पन्न करनेवाला और लोकरंजन तथा लोकशिक्षा का प्रभावशाली जनमाध्यम है।''

सिनेमा : निर्माण प्रविधी :

सिनेमा निर्माण यह किसी एक व्यक्ति का काम नहीं सिनेमा निर्माण यह एक सामुहिक कला है। सिनेमा में निर्माण योजना से लेकर प्रदर्शन तक कई कलाकारों की और यांत्रिक उपकरणों की आवश्यकता होती है। विश्व की अन्य कलाओं में और सिनेमा में काफी अंतर है। जैसे मूर्ति कलाकार आवश्यक सामग्री लेकर अकेला एक आदर्श कला का निर्माण कर सकता है। कोई भी फिल्म निर्माता को सिनेमा बनाने के लिए कई लोगों की और वैज्ञानिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। फिल्म निर्माण की प्रक्रिया निम्नांकित चरणों से गुजरती हैं।

अ) निर्माण पूर्व चरण :

निर्माता एवं निर्माण योजना, कथा चयन, अर्थव्यवस्था विभिन्न सूचियां, संयोजन, शुटिंग शेड्युल, चुनाव एवं नियुक्त, निर्माण का चरण।

ब) छायांकन :

१. निर्देशक काष्ट
२. ध्वनि एवं प्रकार
३. सिनेमेटोग्राफी, कॅमेरा, स्टाक आदि.

ब) निर्माणोत्तर चरण :

वितरण प्रदर्शन, सेंसॉर, पुनसंपादन डबिंग, फायनल प्रिंट, गीत, संगीत, ध्वनिरेकॉर्डिंग, स्पेशल इफेक्ट, संपादन फिल्म कटिंग।

फिल्मांतरण :

''फिल्मांतरण'' यह शब्द अंग्रेजी के मुल शब्द फिल्म ॲडाप्टेशन Film Adaptation के समान अर्थवाला शब्द है। जिसका अर्थ है साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण फिल्म-क्षेत्र में इस शब्द का अर्थ साहित्य को फिल्म में अंतरित करने के अर्थ से लिखा जाता है।

साहित्य और सिनेमा ये दोनों भी अलग-अलग कलाएँ है। दोनों की अपनी-अपनी अलग-अलग विशेषताएँ है। इसी कारण फिल्मांतरण यह बात विवादास्पद रही है। ''फिर भी सिनेमा के आरंभिक समय से लेकर आज तक निरंतर रूप से हो रहे साहित्य के फिल्मांतर ने अपने महत्व को स्वयं स्पष्ट किया है। चूंकि साहित्य और सिनेमा दोनों स्वतंत्र कलाएँ हैं, इसलिए फिल्मांतरण की प्रक्रिया में साहित्य-कृती में परिवर्तन अनिवार्यत: हो जाता है, और यही फिल्मांतरण क सबसे ज्यादा विवादास्पद मुद्दा रहा है।''

सिनेमा का आरंभ उन्नीसवी सदी के अंतिम दशक में हुआ। विश्व सिनेमा की अब तक की श्रेष्ठ फिल्मे साहित्य पर आधारित है। लेकिन भारतीय फिल्मों में यह बहुत कम मात्रा में दिखाई देता है। हिंदी साहित्य के फिल्मांतरण का आरंभ १९३४ में प्रेमचंद की कहानी पर बनी फिल्म ''द मिल (मजदूर) से माना जाता है। कोई साहित्यकृति फिल्मांतरीत होते समय विभिन्न चरणोंसे गुजरती है। पटकथा, संवाद, छायांकन सेट, कॉस्ट्यूम, अभिनय, निदेशन आदि अनेक चरणोंसे गुजरकर साहित्य शब्दों से पर्दे तक पहुँचता है।

साहित्य का फिल्मांतर यह बहुत जटिल और कठिण प्रक्रिया है। साहित्य का फिल्मांतर निम्नांकित बिंदुओं पर आधारित होता है।

१. कथा का फिल्मांतरण
२. पात्र तथा चरित्र का फिल्मांतरण
३. संवादों का फिल्मांतरण
४. देश-काल एवं वातावरण का फिल्मांतरण
५. उद्देश्य का फिल्मांतरण
६. भाषा का फिल्मांतरण

साहित्य का फिल्मांतरण करना किसी भी फिल्म निर्देशक के लिए एक चुनौती भरा काम होता है। साहित्य और फिल्मांतरण यह अलग-अलग दो कलाएँ है। दोनों की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ होने के बावजूद भी हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं आधारित फिल्मों का निर्माण आज हो चुका है।

अत: कहा जा सकता है कि साहित्य और सिनेमा दोनों भी एक ऐसे माध्यम है जो अपने परिवेश, समाज और विचारधाराओं को व्यक्त करनेमें सबसे अधिक सबल और सक्षम माध्यम है। साहित्य और सिनेमा के संबंध के बारे में कहना है तो सिनेमा हमेशा साहित्य का ऋणी है। हम सिनेमा के आरंभ का विचार करे अथवा भविष्य का विचार तो यह बात स्पष्ट है कि सिनेमा अपने आरंभ से ही साहित्यिक रचनाओं से जुडा रहा है। जिस प्रकार साहित्य में विषय वस्तु को कथानक के माध्यम से बताया जाता है, सिनेमा मे ठिक उसी प्रकार परकथा के माध्यम से बताया जाता है।

संदर्भ :

१. सिनेमा और दलित - डॉ.अनिल कांबले
२. सिनेमा और फिल्मांतरित साहित्य- डॉ.गोकुल क्षीरसागर
३. सिनेमा और फिल्मांतरित साहित्य- डॉ.गोकुल क्षीरसागर.

●●●